International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 3, March - 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पर्यावरण शिक्षा में व्याख्यान एवं क्रियात्मक शिक्षण–विधियों की सार्थकता के बारे में विधार्थियों का दृष्टिकोण''

Dr. Manju mishta
Assistant professor
SS Khanna Girls degree college,Allahbad,U.P

पर्यावरण शिक्षा के विषय में यूनेस्को ने कहा है कि ''पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति, प्रकृति एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराते हुए पर्यावरण सुधार हेतु प्रेरणा प्रदान करती है। ''पर्यावरण शिक्षा को इसके विस्तृत अर्थ में लिया जाना चाहिये। यह मानव व्यवहार के तीन पक्षों–ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक से सम्बन्धित है यह न केवल पर्यावरण संरक्षण से संबंधित है, वरन् मानव जीवन से सम्बन्धित ज्ञान, बोध, कौशल, अभिवृत्ति तथा मूल्य आदि का विकास करना भी इसमें निहित है। प्राकृतिक संसाधनो का उचित व विवेकपूर्ण उपयोग, जल, वायु व मिट्टी का अनुरक्षण तथा अवशिश्ट पदार्थो का शोधन करने की विधियों का ज्ञान, कौशल तथा मनोवृत्ति पर्यावरण शिक्षा के अन्तर्गत आते हैं। अतः हम कह सकते है कि पर्यावरण शिक्षा का तात्पर्य है, लोगों को पर्यावरण के संरक्षण, सजगता तथा प्रदूषण रोकने की जानकरी देना। प्राकृतिक तत्वों के असंतुलन के परिणामों से लोगों को जागरूक करना।

किसी भी विषय में यदि जागरूकता लाना है तो सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा ही है। इसीलिये पर्यावरण को भी शिक्षा के एक विषय के रूप में शामिल कर लिया गया। पर्यावरण शिक्षा एक नया प्रत्यय अवश्य है किन्तु इसकी जड़ें अति प्रचीन है। ऋग्वेद की श्रृचाओं में कामना की गयी है किं ''पृथ्वी माता की धूल तथा पितृ–तुल्य आकाश का प्रकाश मंगलमय हो, सूर्य अपने पूर्ण तेज के साथ अपने अंश से जुड़ा रहे। सम्पूर्ण विश्व अखिल ब्रह्मण्ड प्रभुमय होगा आनन्त और शान्ति का अभ्युदय होगा।

किन्तु वर्तमान परिस्थितयों में सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड में आनन्द और शक्ति का स्थान क्रमशः और अशांति ने ले लिया है। जिसका मुख्य कारण है पृथ्वी माता को धूल और पिता समान आकाश के प्रकाश का अमंगलकारी हो जाना, प्रदूषित हो जाना।

अतः वातावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिये आज आवश्यकता है पर्यावरण शिक्षा की। इसी उद्देश्य के लिये 6 जून को पूरे विश्व में 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। वास्तव में पर्यावरण शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो विश्व समुदाय को पर्यावरण की समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी देता है। जिससे वे समस्याओं से अवगत होकर उनका हल खोज सकें और साथ ही भविष्य में आने वाली समस्याओं को रोक सकें। पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी जानकारी को तीन स्तरों में निर्धारित करके व्यक्ति तक पहुंचाया जाता है, जैसे–

1. **सुनकर तथा पढ़कर सीखते है–** इसमें ज्ञानात्मक पक्ष का विकास होता है। यह स्थायी नहीं होती हैं।
2. **देखकर, प्रत्यक्षीकरण से–** इसमें शुद्ध ज्ञान के साथ भावात्मक पक्ष भी विकसित होता है। इसे शीघ्र नहीं भूला जा सकता।
3. **करके सीखना–** इसमें क्रियात्मक ज्ञान जैसे वृक्षारोपण करना, सफाई अभियान में कार्य करना इत्यादि से क्रियात्मक पक्ष के साथ भाव पक्ष भी विकसित होता है इसे भूला नहीं जा सकता है। यह स्थायी ज्ञान होता है।

पर्यावरण शिक्षा को सम्पूर्ण शिक्षा के स्तरों में पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया गया है। विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर इसकी शिक्षण विधियां भी भिन्न–भिन्न है, जैसे–

1. व्याख्यान विधि
2. वाद–विवाद विधि
3. पर्यटन विधि
4. प्रोजेक्ट विधि
5. प्रदर्शन विधि

शिक्षा के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर सर्वप्रथम प्राथमिक स्तर जो

शिक्षा के विभिन्न स्तरों का आधार हैं में शिक्षण विधि के विषय में प्रस्तुत अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है–

उद्देश्यः

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को व्याख्यान तथा क्रियात्मक शिक्षण–विधियों द्वारा प्रदान करने के बारे में शिक्षकों की क्रियात्मक शिक्षण विधि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः

प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के लिये शिक्षकों द्वारा अपनायी गयी व्याख्यान विधि से क्रियात्मक विधि की सार्थकता अधिक है।

अध्ययन विधिः

प्रस्तुत अध्ययन हेतु असंरचित साक्षात्कार विधि के माध्यम से जानकारी ली गयी। जिसके अन्तर्गत इलाहाबाद नगर के प्राथमिक स्तर के कक्षा 1 से 5 तक की सभी कक्षाओं के 5–5 विद्यार्थियों से अर्थात कुल 25 विद्यार्थियों से साक्षात्कार किया गया।

अध्ययन सीमाः

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र इलाहाबाद के नगरीय क्षेत्र के विद्यालय ही रहे हैं।

निष्कर्षः

1. यह पाया गया कि कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाने वाले सैद्धान्तिक पाठों से छात्रों में नीरसता आती है और वे कक्षा में नहीं बैठना चाहतें है।
2. छात्रों का मानना है कि अन्य विषयों की तरह याद करने के लिए एक और विषय का बोझ बढ़ गया है।

3. खुद से मिट्टी खोदकर क्यारी बनाने में छात्रों को अच्छा लगा है। क्यारी में बीज डालना या पौधे लगाकर उसकी देखभाल करने में उनकी रूचि होती है। ये पाठ उन्हें अपने आप याद रहते है। इन्हें रटने की जरूरत नहीं पड़ती है। ये स्मृति पटल पर चिर स्थायी होते हैं।

अतः प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को क्रियात्मक विधि से देने से अधिक प्रभावी है। पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित जानकारियों को मात्र रटवाने की अपेक्षा यदि क्रियात्मक से प्रदान किया जाय तो वह अधिक याद रहती है।

सुझावः

अध्ययन के निष्कर्षो पर यदि ध्यान केन्द्रित करें तो कुछ सुझाव इस प्रकार है–

- प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1 से लेकर कक्षा 3 तक, शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के संदर्भ में व्याख्यान विधि के द्वारा शिक्षण करने की अपेक्षा विद्यार्थियों से कुछ क्रियात्मक कार्य करायें।

कक्षा 4 एवं कक्षा 5 की कक्षाओं में व्याख्यान विधि और क्रियात्मक शिक्षण विधि का संतुलन होना चाहिये। अर्थात् व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण करने के साथ ही साथ विद्यार्थियों से कुछ प्रयोगात्मक कार्य भी कराएं जाए, जैसे– पौधे लगाना आदि।